भारत

भौगोलिक विस्तार

- जिस भारत को हम इतिहास में पढ़ते हैं उसमे कई देश शामिल है। मुख्य रूप से इसमें दक्षिण एशिया आता है।
- दक्षिण एशिया एक महाद्वीप से छोटा है। इसका विशाल क्षेत्र है और समुद्रों, पहाड़ियों तथा पर्वतों से यह बाकी एशिया से बँटा हुआ है जिसके कारण इसे प्राय: उपमहाद्वीप कहा जाता है।
- नीचे मानचित्र दक्षिण एशिया (आधुनिक भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान और श्रीलंका) और अफ़गानिस्तान, ईरान, चीन तथा म्यांमार आदि पड़ोसी देशों को दर्शाता है।

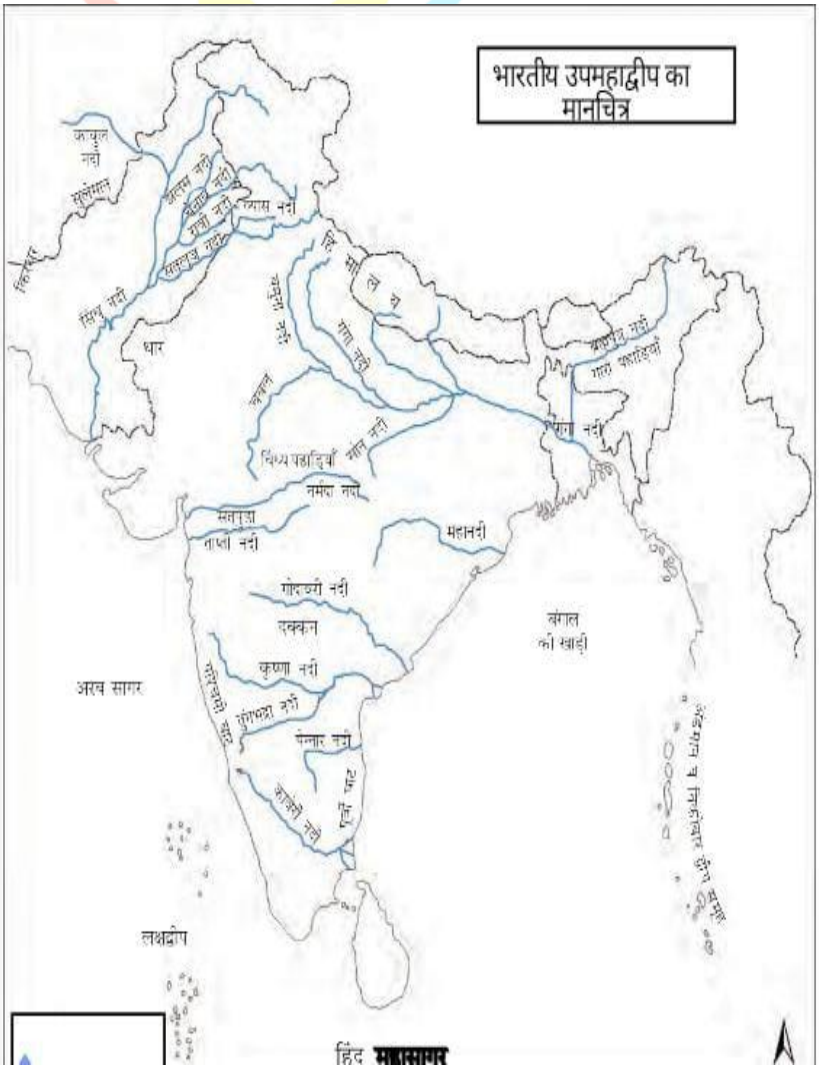

- भारतीय उपमहाद्वीप शब्द औपनिवेशिक विरासत से जुड़ा हुआ है| इतिहासकार आयशा जलाल के अनुसार, भारतीय उपमहाद्वीप को दक्षिण एशिया के रूप में जाना जाता है।

- इस उपमहाद्वीप में आमतौर पर भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश सम्मिलित किए जाते हैं, इसके साथ ही साथ नेपाल, भूटान और श्रीलंका को भी प्रायः सम्मिलित किया जाता है और कभी-कभी अफ़गानिस्तान और मालदीव भी सम्मिलित किए जाते हैं। इस क्षेत्र में अक्साई चिन का विवादित क्षेत्र भी है जो ब्रिटिश राज के रियासती राज्य जम्मू और कश्मीर का भाग था। जब कभी भारतीय उपमहाद्वीप का उपयोग दक्षिण एशिया के संदर्भ में किया जाता है तो इसमें कभी-कभी श्रीलंका और मालदीव को सम्मिलित नहीं किया जाता, जबकि नेपाल और तिब्बत को प्रकरणानुसार इसमें सम्मिलित किया या नहीं किया जाता। भारतीय इतिहास के अध्ययन के क्रम में दक्षिण पूर्वी अफगानिस्तान, पाकिस्तान, आज का भारत, बांग्लादेश, उत्तरी वर्मा एवं नेपाल की तराई आदि मुख्य रूप से आयेंगे|

- भारतीय उपमहाद्वीप का क्षेत्र 42,02,500 वर्ग कि॰ मी॰ का है|

भौगोलिक लाभांश

- भारतीय उप-महाखंड एक सुस्पष्ट भौगोलिक इकाई है, और यह अधिकांशतः उष्णकटिबंध में स्थित है।

- यह उत्तर में हिमालय से और शेष तीन दिशाओं में समुद्रों से घिरा हुआ है। साइबेरिया से चलकर मध्य एशिया पार करनेवाली उत्तरध्रुवीय ठंडी हवाओं को हिमालय रोकता है और इस प्रकार हमारे देश की रक्षा करता है । यही कारण है कि उत्तर भारत की जलवायु लगभग पूरे साल भर काफी गर्म रहती है। चूंकि मैदानों में अत्यधिक जाड़ा नहीं होता, इसलिए लोगों को बहुत अधिक कपड़े नहीं पहनने पड़ते और वे खुले में अधिक समय तक रह सकते हैं।

- हिमालय काफी ऊंचा है और उत्तर की ओर से होने वाले हमलों से देश की रक्षा करता रहा है। यह बात उन दिनों पर विशेष रूप से लागू होती है जब औद्योगिक युग की शुरूआत नहीं हुई थी और संचार- साधन इतने विकसित नहीं हुए थे।

- उत्तर-पश्चिम में, सुलेमान पर्वत श्रृंखला जो दक्षिण की ओर हिमालय पर्वत श्रृंखला की कड़ी है खैबर, गोमल और बोलन दर्रों से पार की जा सकती थी । खैबर दर्रा एक पहाड़ी दर्रा है जो अफगानिस्तान और पाकिस्तान को जोड़ता है । अपने पूरे इतिहास में यह मध्य एशिया और दक्षिण एशिया के बीच एक महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग रहा है, और इसका एक सामरिक सैन्य स्थान है। गोमल दर्रा पाकिस्तान का एक प्रमुख दर्रा है। यह सुलेमान पर्वतमाला के उत्तरी छोर पर स्थित है। यह प्रसिद्ध दर्रा खैबर तथा

बोलन दर्रों के बीच में है। दक्षिण की ओर बलूचिस्तान में सुलेमान पर्वत श्रृंखला किर्थार पर्वत श्रृंखला से जुड़ती है, जिसे बोलन दर्रे से पार किया जा सकता था ।

- इन दर्रों से भारत और मध्य एशिया के बीच प्राक् ऐतिहासिक काल से आवागमन जारी है। ईरान, अफगानिस्तान और सोवियत मध्य एशिया के अनेक लोग हमलावरों अथवा आप्रवासियों के रूप में भारत आए और भारत से वहां गए।

- यहां तक कि हिमालय पर्वत श्रृंखला का पश्चिम की ओर विस्तार जिसे हिन्दूकुश कहा जाता है सिधु और ऑक्सस के बीच अलंघ्य बाधा नहीं साबित हुआ । मध्य एशिया और पश्चिमी एशिया के साथ व्यापार सांस्कृतिक संबंध स्थापित करने में भी इन दर्रों ने बड़ा सहयोग दिया।

- हिमालय में ही कश्मीर और नेपाल की तराई हैं। कश्मीर की घाटी चारों ओर से ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से घिरी हुई है। इससे उसने अपनी अलग तरह की जीवन- पद्धति विकसित कर ली थी। लेकिन यहां कई दरों द्वारा पहुंचा जा सकता था।

- इस घाटी के कड़े जाड़े के कारण यहां के अनेक लोगों को सर्दियों में नीचे मैदानों में उतर जाना पड़ता था और गर्मियों में मैदानों के भेड़-बकरी चराने वाले यहां चले आते थे। इस तरह से मैदानों और इस घाटी के बीच धार्थिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान बना हुआ था।

- मध्य एशिया के इलाकों से बौद्ध धर्म को फैलने देने में कश्मीर के पामीर प्लेटू ने कोई बाधा नहीं डाली। नेपाल की घाटी आकार में छोटी है। गंगा के मैदानी इलाकों के लोगों ने यहां तक पहुँचने के लिए अनेक दरें ढूंढ निकाले थे। संस्कृत भाषा और साहित्य की उन्नति इस घाटी में खूब हुई। दोनों ही तराई संस्कृत पांडुलिपियों का सबसे बड़ा भंडार रही हैं।

- मैदानों की जलोढ़ धरती में पनपे घने जंगलों की अपेक्षा हिमालय की तराइयों में रास्ता बनाना आसान था। इन तराइयों में बहने वाली नदियां कम चौड़ी होती हैं। इससे उन्हें पार करना कठिन न था। इसलिए प्रारंभिक यात्रा मार्ग हिमालय की तराइयों में ही पश्चिम से पूर्व को और पूर्व से पश्चिम को पनपे। इन्हीं कारणों से यह स्वाभाविक ही था कि ईसा पूर्व छठी शताब्दी में सबसे पुरानी कृषि बस्तियां तराई वाले इलाकों में ही बनीं और यही के रास्ते व्यापार के लिए विकसित किए गए।

- प्राकृतिक संपदा के उपभोग का देश के इतिहास में एक विशिष्ट महत्त्व है ।

❑ लकड़ी

- बड़े पैमाने पर बस्तियों की स्थापना होने के पहले भारत के मैदान घने जंगलों से आबाद थे; इन जंगलों से शिकार के अलावा पशुओं का चारा, ईंधन और इमारती लकड़ी भी प्राप्त होती थी।
- प्राचीन काल में जब पकाई हुई ईंटों का अधिक इस्तेमाल नहीं होता था, तो लकड़ी के मकान और अन्य सामग्रियां बनाए जाते थे ।
- इनके अवशेष पाटलिपुत्र में, जहां देश की पहली प्रमुख राजधानी स्थापित हुई थी, मिले हैं।

❑ पत्थर

- स्थापत्य और औजारों के लिए सभी किस्म का पत्थर, बलुआ पत्थर भी, देश में उपलब्ध था।
- यह स्वाभाविक ही है कि भारत में सबसे प्राचीन बस्तियां पहाड़ी क्षेत्रों में और पहाड़ों के बीच की नदी घाटियों में स्थापित हुई थीं ।
- ऐतिहासिक युगों में पत्थरों के मंदिरों और पत्थरों की मूर्तियों का निर्माण उत्तर भारत के मैदानों की अपेक्षा दक्खन तथा दक्षिण भारत में अधिक संख्या में हुआ है ।

❑ तांबा

- देश में तांबे की अनेक खानें हैं। तांबे की सबसे समृद्ध खानें छोटा नागपुर के पठार में, विशेषतः सिंघभूम जिले में हैं। तांबे की यह पेटी 130 किलोमीटर लंबी है और पता चलता है कि प्राचीन काल में यहां से तांबा निकाला जाता था ।
- तांबे के औजारों का इस्तेमाल करने वाले बिहार के सबसे प्राचीन निवासियों ने सिंघभूम और हजारीबाग की तांबे की इन खानों का उपयोग किया था । दक्षिणी बिहार, झारखंड और मध्यप्रदेश के कुछ क्षेत्रों में तांबे के औजार मिले हैं ।

- तांबे के विपुल भंडार राजस्थान की खेत्री खानों में भी मिले हैं। इनका उपयोग पाकिस्तान, राजस्थान, गुजरात और गंगा- यमुना के दोआब में रहने वाले पूर्व वैदिक तथा वैदिक दोनों ही लोगों ने किया है चूंकि तांबा उपयोग में लाई गई पहली धातु थी, इसलिए हिन्दू लोग इस धातु को अतिशुद्ध मानने लगे और तांबे के बर्तन भांडों का धार्मिक अनुष्ठानों में इस्तेमाल होने लगा ।

❑ टिन

- आज हमारे देश में टिन का उत्पादन नहीं होता; प्राचीन काल में भी यह धातु कम ही उपलब्ध थी । कुछ सबूत मिलते हैं कि यह धातु राजस्थान और बिहार में पायी जाती थी, परंतु अब इसके भंडार समाप्त हैं चूंकि तांबे और टिन को मिलाने से ही कांसा बनता है।

- हड़प्पा संस्कृति के लोग संभवत: राजस्थान से कुछ टिन प्राप्त करते थे, परंतु टिन का आयात मुख्यतः वे ईरान व अफगानिस्तान से ही करते थे, और वह भी सीमित मात्रा में।

- यही कारण है कि, यद्यपि हड़प्पा संस्कृति के लोग कांसे के औजारों का इस्तेमाल करते थे, किन्तु यहां पर ऐसे औजार पश्चिमी एशिया, मिस्र और क्रीट की अपेक्षा कम ही मिले हैं, और जो मिले हैं उनमें टिन का अनुपात कम है ।

- अत: भारत में समीचीन कांस्ययुग का अस्तित्व नहीं रहा, यानी एक ऐसे युग का जब अधिकतर कांसे के औजार और वस्तुएं बनी हों।

- ईसवी सन् की आरंभिक सदियों से बर्मा और मलय प्रायद्वीप से, जहां टिन के विपुल भंडार हैं, भारत के गहरे संबंध स्थापित हुए। फलस्वरूप बड़ी मात्रा में कांसे का इस्तेमाल होने लगा, विशेषतः दक्षिण भारत में निर्मित देवी-देवताओं की मूर्तियों के लिए।

- बिहार से मिली पालकालीन कांस्य मूर्तियों के लिए संभवतः हजारीबाग और रांची से टिन प्राप्त किया गया था, क्योंकि हजारीबाग में पिछली सदी के मध्यकाल तक टिन के खनिज को गलाने का काम होता था ।

❑ लोहा

- भारत में लौह खनिज के विपुल भंडार हैं और ये मुख्यतः झारखंड, पूर्वी मध्यप्रदेश तथा कर्नाटक में पाये जाते हैं ।
- एक बार प्रगलन की विधि, धौंकनी का इस्तेमाल (और इस्पात बनाने की कला) सीख लेने के बाद युद्ध के लिए लोहे का उपयोग करना संभव हुआ । परंतु लोहा कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ जंगलों को साफ करने के लिए और गहरी तथा नियमित कृषि के लिए ।
- मगध में ईसापूर्व छठी-चौथी सदियों में पहले साम्राज्य की स्थापना होने का प्रमुख कारण यही था कि इस प्रदेश के ठीक दक्षिण में लोहा उपलब्ध था । बड़े पैमाने पर लोहे का इस्तेमाल किए जाने के कारण ही अवन्ती, जिसकी राजधानी उज्जैन में थी, ईसा पूर्व छठी- पाचवीं सदियों का एक महत्त्वपूर्ण राज्य बन गया था ।
- सातवाहनों ने और विध्य के दक्षिण में उदित हुई अन्यशक्तियों ने संभवतः आन्ध्र तथा कर्नाटक के लोह खनिजों का इस्तेमाल किया था ।

❑ सीसा (लेड)

- आन्ध्र प्रदेश में सीसा (लेड) भी मिलता है । यही कारण है कि ईसा की दो आरंभिक सदियों में आन्ध्र और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों पर शासन करने वाले सातवाहनों ने बड़ी संख्या में सीसे के सिक्के जारी किए थे ।

❑ चांदी

- हमारे देश के सबसे प्राचीन सिक्के, जिन्हें पंचमार्क अथवा आहत सिक्के कहते हैं, मुख्यतः चांदी के हैं, यद्यपि देश में यह धातु दुर्लभ ही मिलती है।
- परंतु प्राचीन काल में मुंगेर जिले की खड़गपुर पहाड़ियों में चांदी की खानें मौजूद थी; अकबर के समय तक इन खानों के उल्लेख मिलते हैं । यही वजह है कि बिहार से प्राप्त प्राचीनतम पंचमार्क सिक्के चांदी के हैं ।

❑ सोना

- सोना कर्नाटक की कोलार खानों में मिलता है।

- सोने का सबसे प्राचीन अवशेष 1800 ई. पू. के आसपास के कर्नाटक के एक नवपाषाण युगीन स्थल से मिला है । इन खानों से सोना निकाले जाने के बारे में ईसा की दूसरी सदी के प्रारंभ तक हमें कोई जानकारी नहीं मिलती।

- कोलार को दक्षिण कर्नाटक के गंग लोगों की प्राचीनतम राजधानी माना जाता है प्राचीन काल में उपयोग में लाया गया अधिकांश सोना मध्य एशिया और रोमन साम्राज्य से प्राप्त किया गया था । इसलिए स्वर्णमुद्राओं का नियमित प्रचलन ईसा की आरंभिक पांच सदियों में हुआ था । चूंकि लंबी अवधि तक स्वर्णमुद्राओं के चलन को जारी रखने के लिए यहां पर्याप्त स्रोत नहीं थे, इसलिए बाहर से सोने का आयात बंद हो जाने पर स्वर्णमुद्राएं दुर्लभ हो जाती थीं ।

❑ प्राचीन भारत में, विशेषतः मध्य भारत, उड़ीसा और दक्षिण भारत में, कई किस्म के कीमती पत्थरों का, मोतियों का भी उत्पादन होता था। ईसा की आरंभिक सदियों में रोमन लोग भारत की जिन व्यापारी वस्तुओं के लिए लालायित रहते थे उनमें कीमती पत्थरों का प्रमुख स्थान था|

विस्तृत भौगोलिक ईकाई की एकसूत्रता

- हमारे प्राचीन कवियों, दार्शनिकों और ग्रंथकारों ने इस देश/भौगोलिक ईकाई की कल्पना एक प्रखंड इकाई के रूप में ही की है। हिमालय से समुद्र तक विस्तृत इस भूमि को उन्होंने एक सार्वभौम राजा द्वारा शासित क्षेत्र कहा है।

- जिन राजाओं ने हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक और पूर्व में ब्रह्मपुत्र की घाटी से लेकर पश्चिम में सिन्धु घाटी तक अपना राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया उनकी सभी ने स्तुति की है। उन्हें चक्रवर्तिन् कहा गया है।

- देश में इस प्रकार की राजनीतिक एकता कम-से-कम दो बार स्थापित हुई।
  - ईसा पूर्व तीसरी सदी में अशोक का साम्राज्य सुदूर दक्षिण के अलावा शेष पूरे भारत में फैला हुआ था ।
  - पुनः ईसा की चौथी सदी में समुद्रगुप्त की विजयी सेना गंगा की घाटी से तमिल देश की सीमाओं तक पहुंच गई थी ।

- ईसा की सातवीं सदी में चालुक्य नरेश पुलकेशिन ने उस हर्षवर्धन को हराया जिसे संपूर्ण उत्तर भारत का अधिपति माना गया था।
- राजनीतिक एकता के अभाव के बावजूद संपूर्ण देश में राजनीतिक संरचना का स्वरूप बहुत कुछ एक जैसा ही बनता गया।
- विजेताओं और सांस्कृतिक नेताओं ने भारत की कल्पना एक भौगोलिक इकाई के रूप में ही की है विदेशियों ने भी भारत की एकता को स्वीकार किया।
- सर्वप्रथम विदेशी(इरानी) सिन्धु तटवासियों के संपर्क में आए और इसलिए उन्होंने पूरे देश को इसी नदी का नाम दिया । 'हिन्द' शब्द संस्कृत के 'सिन्धु' शब्द से बना पूरे देश को इसी का नाम दिया| हिन्दू शब्द संस्कृत के सिन्धु शब्द से बना है। कालांतर में यूनानी में यह 'देश 'इंडिया' कहलाया और फ़ारसी तथा अरबी में इसे 'हिन्द' कहा जाने लगा ।
- भाषा और संस्कृति की दृष्टि से देश को एकसूत्रता में बांधने के भी प्रयास हुए हैं । ईसा पूर्व तीसरी सदी में देश की सामान्य भाषा प्राकृत थी। देश के कोने-कोने में फैले हुए अशोक के शिलालेखों की भाषा प्राकृत है। बाद में यही दर्जा संस्कृत को मिला और देश के सुदूर क्षेत्रों में यह राजभाषा बन गई। यह प्रक्रिया ईसा की चौथी सदी में गुप्तकाल में सुस्पष्ट हो गयी। गुप्तकाल के बाद राजनीतिक दृष्टि से देश यद्यपि छोटे-छोटे राज्यों में बंटा हुआ था, पर राजकीय दस्तावेज संस्कृत में ही लिखे गए।

भौगोलिक ईकाई के लिए प्रयुक्त विभिन्न नाम

- भारतीय उप महाद्वीप के विभिन्न नाम निम्न हैं: -

नाम	प्रमुख तथ्य
हिन्दूस्तान	✓ छठीं सदी ई0 पूर्व ईरानियों द्वारा संस्कृत में प्रयुक्त सिंधु को हिंदोस ✓ इस नदी के पूर्व में स्थित भूमि को हिंदुग ✓ छठीं सदी ई0 पूर्व के सूसा लेख जो कि ईरानी भाषा का लेख है, में महल बनाने में हिंदुग क्षेत्र अर्थात सिधुपार के क्षेत्र से आए हाथी

	दाँत के उपयोग का उल्लेख है और यही शब्द ईरानियों में प्रचलित हुआ। ✓ कालांतर मे अरबों द्वारा भौगोलिक भाषाई आधार पर प्रयोग
भारत	✓ सर्वप्रथम एक क्षेत्र के रूप में भारत का उल्लेख पाणिनी द्वारा किया गया। ✓ संपूर्ण देश को भरत नामक एक प्राचीन कुल के नाम पर भारतवर्ष (भरत का देश) नाम दिया गया और इसके निवासियों को भरतसंतति कहा गया। ✓ पुराण (वायु पुराण तथा विष्णु पुराण) मे धार्मिक एवं भौगोलिक आधार पर प्रयोग ✓ संस्कृत की आरंभिक कृति ऋग्वेद के सातवें मंडल में वर्णित दशराज युद्ध मे भरत जन के शासक सुदास ने अपने पुरोहित वशिष्ठ के मार्गदर्शन मे दस राजाओं के समूह को परूष्णि नदी के तट पर हराया और भारतों का प्रभुत्व कायम हो गया| भरत जन के इस भूमिका के कारण बाद में इस क्षेत्र को भारत कहा गया|
इंडिया	✓ चतुर्थ सदी ईसवी पूर्व में यूनानी संस्कृत में प्रयुक्त सिंधु को इण्डस पुकारते हैं ✓ इस नदी के पूर्व में स्थित भूमि प्रदेश को इण्डिया कहा। ✓ इण्डस से इंडिया शब्द निकला है ✓ भौगोलिक भाषाई आधार पर प्रयोग
आर्यावर्त	✓ पंतजलि के समय दिया गया।
जम्बू द्वीप	✓ बौद्ध, जैन एवं हिन्दू मतावलम्बियों द्वारा प्रयोग में लाया गया। ✓ बौद्ध/ जैन मतावलम्बियों द्वारा हिन्दू मतावलम्बियों के पुराण (संकलन काल छःठीं सदी ईसवी पूर्व) में इस शब्द के उल्लेख के

	लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व इस नाम का उल्लेख किया गया है। ✓ बौद्ध और जैन मतावलम्बियों द्वारा विशुद्ध आज के भारत के लिए इस नाम का प्रयोग । ✓ हिन्दू मतावलम्बियों द्वारा जम्बू द्वीप को व्यापक ढंग से परिभाषित किया गया। वह क्षेत्र जिसके उत्तर में साईबेरिया, दक्षिण में सेतु बंध (हिन्द महासागर), पूरब में चीन एवं पश्चिम में बैक्टीरिया एवं केन्द्र में पामीर है, के रूप में परिभाषित किया गया। जम्बू द्वीप को सात संकेन्द्रिक वृत्त के केन्द्र में बताया गया है।
इन-तू को	✓ प्रथम ई0 पूर्व में चीनियों द्वारा सिंधु का उच्चारण इन्तू किया गया एवं सिंधुपार के देश को इन-तू को कहा गया।
शिन-तू को	✓ दूसरी सदी ईसवी मे चीनियों ने इन-तू-को नाम को शिन-तू को के रूप में परिवर्तित किया
ति एन शू	✓ चीनियों द्वारा ✓ देवताओं का क्षेत्र कहा गया।

SANDHAN GURUKUL